॥ श्रीहरिः ॥

शिव चालीसा

228

गीताप्रेस गोरखपुर

श्रीशिवचालीसा

—०—

श्रीशिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।

नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥

—o—

दोहा

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार ।
बंदौं शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार ।। १ ।।
आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति-मुक्ति-दातार ।
करौ अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार ।। २ ।।
पर्यो पतित भवकूप महँ सहज नरक आगार ।
सहज सुहृद पावन-पतित, सहजहि लेहु उबार ।। ३ ।।
पलक-पलक आशा भर्यो, रह्यो सुबाट निहार ।
ढरौ तुरंत स्वभाववश, नेक न करौ अबार ।। ४ ।।

जय शिव शंकर औढरदानी ।
जय गिरितनया मातु भवानी ॥ १ ॥
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर ।
सर्वलोक-ईश्वर-परमेश्वर ॥ २ ॥
सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता ।
उपद्रष्टा भर्ता अनुमन्ता ॥ ३ ॥

पराशक्ति-पति अखिल विश्वपति ।
परब्रह्म परधाम परमगति ॥ ४ ॥
सर्वातीत अनन्य सर्वगत ।
निजस्वरूप महिमामें स्थितरत ॥ ५ ॥
अंगभूति-भूषित श्मशानचर ।
भुजंगभूषण चन्द्रमुकुटधर ॥ ६ ॥

वृषवाहन नंदीगणनायक ।
अखिल विश्वकेभाग्य-विधायक ॥ ७ ॥
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर ।
रीछचर्म ओढे गिरिजावर ॥ ८ ॥
कर त्रिशूल डमरूवर राजत ।
अभय वरद मुद्रा शुभ साजत ॥ ९ ॥

तनु कर्पूर-गौर उज्ज्वलतम ।
पिंगल जटाजूट सिर उत्तम ॥ १० ॥
भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर ।
गल रुद्राक्ष-माल शोभाकर ॥ ११ ॥
विधि-हरि-रुद्र त्रिविध वपुधारी ।
बने सृजन-पालन-लयकारी ॥ १२ ॥

तुम हो नित्य दयाके सागर ।
आशुतोष आनन्द-उजागर ।। १३ ।।
अति दयालु भोले भण्डारी ।
अग-जग सबके मंगलकारी ।। १४ ।।
सती-पार्वतीके प्राणेश्वर ।
स्कन्द-गणेश-जनक शिव सुखकर।। १५ ।।

हरि-हर एक रूप गुणशीला ।
करत स्वामि-सेवककी लीला ॥ १६ ॥
रहते दोउ पूजत पुजवावत ।
पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत ॥ १७ ॥
मारुति बन हरि-सेवा कीन्ही ।
रामेश्वर बन सेवा लीन्ही ॥ १८ ॥

जग-हित घोर हलाहल पीकर ।
बने सदाशिव नीलकंठ वर ॥ १९ ॥
असुरासुर शुचि वरद शुभंकर ।
असुरनिहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥ २० ॥
'नमः शिवाय' मन्त्र पञ्चाक्षर ।
जपत मिटत सब क्लेश भयंकर॥ २१ ॥

जो नर-नारि रटत शिव-शिव नित।
तिनको शिव अति करत परमहित॥ २२ ॥
श्रीकृष्ण तप कीन्हों भारी।
ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी॥ २३ ॥
अर्जुन संग लड़े किरात बन।
दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन॥ २४ ॥

भक्तनके सब कष्ट निवारे ।
दे निज भक्ति सबन्हि उद्धारे ॥ २५ ॥
शङ्खचूड़ जालन्धर मारे ।
दैत्य असंख्य प्राण हर तारे ॥ २६ ॥
अन्धकको गणपति पद दीन्हों ।
शुक्र शुक्रपथ बाहर कीन्हों ॥ २७ ॥

तेहि सजीवनि विद्या दीन्हीं ।
बाणासुर गणपति-गति कीन्हीं ॥ २८ ॥
अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय ।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय ॥ २९ ॥
भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा ।
अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥ ३० ॥

काशी मरत जंतु अवलोकी ।
देत मुक्ति-पद करत अशोकी ॥ ३१ ॥
भक्त भगीरथकी रुचि राखी ।
जटा बसी गंगा सुर साखी ॥ ३२ ॥
रुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी ।
ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥ ३३ ॥

शिवरहस्य शिवज्ञान प्रचारक ।
शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक ॥ ३४ ॥
इनके शुभ सुमिरनतें शंकर ।
देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर ॥ ३५ ॥
अति उदार करुणावरुणालय ।
हरण दैन्य-दारिद्र्य-दुःख-भय ॥ ३६ ॥

तुम्हरो भजन परम हितकारी ।
विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ॥ ३७ ॥
बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं ।
ते अलभ्य शिवपदको पावहिं ॥ ३८ ॥
भेदशून्य तुम सबके स्वामी ।
सहज सुहृद सेवक अनुगामी ॥ ३९ ॥

जो जन शरण तुम्हारी आवत ।
सकल दुरित तत्काल नशावत ॥ ४० ॥

दोहा

बहन करौ तुम शीलवश, निज जनकौ सब भार।
गनौ न अघ, अघ-जाति कछु, सब विधि करौ सँभार ॥ १ ॥
तुम्हरो शील स्वभाव लखि, जो न शरण तव होय।
तेहि सम कुटिल कुबुद्धि जन, नहिं कुभाग्य जन कोय ॥ २ ॥
दीन-हीन अति मलिन मति, मैं अघ-ओघ अपार।
कृपा-अनल प्रगटौ तुरत, करौ पाप सब छार ॥ ३ ॥
कृपा-सुधा बरसाय पुनि, शीतल करो पवित्र।
राखौ पदकमलनि सदा, हे कुपात्रके मित्र ! ॥ ४ ॥

श्रीशिवाष्टक

आदि अनादि अनंत अखंड अभेद अखेद सुबेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेस कौ जोगि-जती-मुनि ध्यान न पावैं॥
आगम-निगम-पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ १॥
सृजन सुपालन-लय-लीला हित जो बिधि-हरि-हर रूप बनावैं।
एकहि आप बिचित्र अनेक सुबेष बनाइ कैं लीला रचावैं॥

सुंदर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ २॥
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषन सजि मुनि-मोहन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु बिलसै रतन-हार उर पै लहरावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ३॥
अंग बिभूति रमाय मसानकी बिषमय भुजगनि कौं लपटावैं।

नर-कपाल कर मुंडमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढ़ावैं ॥
घोर दिगंबर, लोचन तीन भयानक देखि कैं सब थर्रावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ४ ॥
सुनतहि दीनकी दीन पुकार दयानिधि आप उबारन धावैं ।
पहुँच तहाँ अविलंब सुदारुन मृत्युको मर्म बिदारि भगावैं ॥
मुनि मृकंडु-सुतकी गाथा सुचि अजहुँ बिग्यजन गाई सुनावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ५ ॥

चाउर चारि जो फूल धतूरके, बेलके पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोला जो 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं॥
तिनहिं महाफल देय सदासिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ६॥
बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य दारिद्र्य नित्य सुख-सांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं॥
असरन-सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलवावैं।

बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं ॥ ७ ॥

औढरदानि, उदार अपार जु नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन असांति, समन सब संकट, बिरद बिचार जनहि अपनावैं ॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ८ ॥

—०—

आरती

आरति परम साम्ब-शंकरकी ।
सत्य सनातन शिव शुभकरकी ॥
आदि, अनादि, अनन्त, अनामय ।
अज, अविनाशी, अकल, कलामय ।
सर्वरहित नित सर्व-उरालय ।

मस्तक सुरसरिधर शशिधरकी ।
आरति परम साम्ब-शंकरकी ॥

कर्ता, भर्ता, जगसंहारी ।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तनुधारी ।
सर्वविकाररूप अविकारी ।
अग-जग-पालक प्रलयंकरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥

विश्वातीत विश्वगत स्वामी ।
द्रष्टा साक्षी अन्तर्यामी ।
काम-काल सब-जग-हित कामी ।
अनघ-स्वरूप सकल अघहरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥
मुनि-मन-हरण मधुर शुचि सुंदर ।
अति कमनीय रूप सुषमावर ।

दिव्याम्बर रत्नाभूषणधर ।

सर्व-नयन-मन-हर सुखकरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥

विकट कराल पंचमुखधारी ।
मुण्डमाल विषधर भयकारी ।
हाथ कपाल श्मशान-बिहारी ।

वेष अमंगल मंगलकरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥
भोगी, योगी, ध्यानी, ज्ञानी ।
जग-अभिमानाधार अमानी ।
आशुतोष अति औढरदानी ।
दैन्य-दुरित-दुर्गतिहर हरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

सं० २०१८ से २०५३ तक	२१,२५,०००
सं० २०५४ बयालीसवाँ संस्करण	५०,०००
योग	२१,७५,०००

मूल्य—[redacted] 3/=

प्रकाशक-मुद्रक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर-273005